International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 5, May 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

Hindi Teaching Methods

Dr. S.N.Manjula

हिन्दी शिक्षण पद्धतियाँ

डॉ. एस. एन. मंजुला

असोसिएट प्रोफेसर

जी.एफ.जी.सी., बंगारपेट,कोलार

आधुनिक युग में रुसों, पेस्तालॉजी, फ्रोबेल, रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इस बात का अनुमोदन किया है कि–शिक्षा बालकों की रुचि के अनुसार दी जाय। इस की इस अवधारणा के अनुसार, आधुनिक युग में अग्रलिखित शिक्षण–पद्धतियाँ प्रचलित हैं–

1. निदर्शित स्वाध्याय प्रणाली (Supervised Study):– इस पद्धति के अंतर्गत विद्यार्थी का योग्य निर्देशन, छात्र–छात्राओं को शिक्षण–विधियों से परिचित कराना, उन्हें शैक्षिक दृष्टिसे आत्मनिर्भर तथा कुशल बनाना।
2. डाल्टन पद्धति अथवा प्रयोगशाला योजना (Contract or Assignment):–इस पद्धति का मुख्य आधार अभिसन्धान–कार्य है, जिसे प्रत्येक बालक तथा बालिका की निर्दिष्ट समय के भीतर प्रयोगशाला में बैठकर एक अन्वेषक की भाँति पूरा करना होता है।
3. प्रयोजन पद्धति (Project Method) :–इस पद्धति में पाँच सोपान पाए जाते हैं–परिस्थिति का निर्माण करना अथवा समस्या की उप्पत्ति, समस्या के सम्बन्ध में विचार–विमर्श तथा समस्या का चुनाव, समस्या को पूरा करने की योजना बनाना, समस्या–पूर्ति तथा तद्जनित ज्ञान की प्राप्ति, समस्या–समाधान के पश्चात् मूल्यांकन अथवा निर्णयात्मक निरीक्षण।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 5, May 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

4. वर्धा योजनाः– इसमें क्रिया द्वारा सीखना के इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को स्वीकार कर लिया गया।
5. बालोद्यान शिक्षण–पद्धतिः–इसमें खेल को एक प्रमुख स्थान दिया है।
6. मॉन्तेसरी पद्धति–इसमें व्यावहारिक जीवन क्रियाएँए ज्ञानेन्द्रियों की शिक्षा, प्रारंभिक पाठ्यक्रम।
7. सूक्ष्म अध्यापन–पद्धतिः– इसमें अध्यापक अभ्यास के लिए थोडे से समय के लिए छोटे से समूह को चुनना है और इस सूक्ष्म अवधि में किसी एक ही कौशल का अभ्यास किया जाता है।

शिक्षा के स्तर गिरने के कारणः– हम अपनी महान संस्कृति को स्वयं ही शिक्षा के नाम पर नष्ट करने में व्यस्त है। आज सर्व शिक्षा अभियान तो चल रही है सरकार, लेकिन सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर काफी निम्न है। हमें अभी तक यह क्यों समझ में नहीं आ रहा हैं कि जब अंग्रेजी यहाँ थे तब उन्हें कम महत्व के काम करने के लिए पढे लिखे मजदूर चाहिए थे–जो आत्म विश्वास हीन, आत्म गौरव से विस्मृत हों। रंग में काले हों पर पोषण खेतों का करें।

राजनैतिक भ्रष्टाचार ने भारत देश के शिक्षा के क्षेत्र पिछडा रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हमारे देश में अंग्रेजी भाषा के प्रति लगातार बढते अंध मोह और यहाँ के जनगण की विभिन्न भाषाओं के प्रति हीन भावना है। विद्यार्थी हिन्दी को सरल और सहज ग्राह्य विषय मानकर उसकी उपेक्षा कर रहा है, उसको सीखने में श्रम नहीं लगाता, उसे बिना रूचि के सीख रहा है।

प्रतिभा पलायन इस देश की बहुत बडी समस्या है–शोध को भ्रष्टाचार खा गया है शोध बिकता भी है और चोरी भी होता है। हमें देश अभी तक ऐसी कोई नीति नहीं बना सका जिससे प्रतिभा प्रलायन को रोका जा सके। गुरूकुल में 14 वर्ष तक निशुल्क 20 से अधिक विषयों का अध्ययन कर गुरूकुल से निकलेवाले बालक में आत्मनिर्भर, देश एवं समाज सेवा हेतु सक्षम हो जाता था। 18 शताब्दी में मैक्स मूलर ने भारत की शिक्षा व्यवस्था पर सबसे

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 5, May 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अधिक शोध किया है, वे लिखते है– "भारत के बंगाल प्रांत में 80 हजार से अधिक गुरूकुल है जो कि कई सहस्त्र वर्षों से निर्बाधित रूप से चल रहे हैं।"

शिक्षा का अर्थ है परीक्षा, अंक प्राप्ति, प्रतिस्पर्धा तथा व्यवसाय जिनको व्यवसाय नहीं मिलता वह बेकारी की सेना में भर्ती हो रहे हैं। शिक्षा में पाश्चात्य संस्कृति से युवक अपनी सांस्कृतिक विरासत को बिल्कुल ही भूल गये हैं। पाश्चात्य के रंग में रंग गये हैं। जो देश अपनी संस्कृति को भूल जाता है उसमें जीवन्तता समाप्त हो जा रही है।

यूनेस्को के कथानुसार किसी भी देश की शिक्षा का सम्बन्ध उस देश की संस्कृति के संरक्षण तथा विकास के लिये होना चाहिए। इस कथन से मार्गदर्शन प्राप्त न करते हुए हम वैश्वीकरण के नाम पर पाश्चात्यीकरण का अन्धानुकरण कर रहे हैं और यह शिक्षा के लिए बहुत बडी चुनौती है ?

भाषा समस्त मानसिक व्यापारों, मनोभावों की अभिव्यक्ति का साधन है। भाषा सामाजिक संगठन, सामाजिक मान्यताओं और सामाजिक व्यवहार के विकास का एकमात्र साधन है। हिन्दी आज भारतीय जनता के बीच राष्ट्रीय संपर्क की भाषा है। हिन्दी भाषियों को अथवा हिन्दी जानने वालों की यह विशाल जनसंख्या हिन्दी के अंतराष्ट्रीय संपर्क का साक्षात्कार कराती है। हमारे यहाँ शिक्षा का स्तर हर जगह समान होना चाहिए। शिक्षा मात्र रोजगार परक ही नहीं बल्कि रोजगार उत्पादन करने में समर्थ होनी चाहिए। ऐसा ज्ञान हो कि व्यक्ति स्वयं के लिए स्वरोजगार निर्माण कर सके। भाषा और साहित्य की बुनियादी अवधारणा को जानना है नही ंतो इसका सीधा प्रभाव उनकी शिक्षण–पद्धति पर पडता है। अध्यापकों को इसकी रक्षा के लिए विशेष जिम्मेदारी निभानी होगी। इंटरनेट द्वारा संपर्क कर विद्यार्थियों की रूचि, उनके रहन–सहन के साथ–साथ अन्य जानकारियों का आदन–प्रदान भी करना चाहिए। छात्रों में अभिव्यक्ति, अन्वेषण, निर्णय लेने , स्व मूल्यांकन करने की क्षमता तथा सृजनात्मक, रचनात्मक, आत्मविश्वास आदि कौशलों का विकास हो सकेगा।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 5, May 2018,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

John Yeats ने ठीक ही कहा है कि– "शिक्षा जिन्दगी की तैयार नहीं है , शिक्षा खुद जिन्दगी है।" हमारे देश में शैक्षणिक शिक्षा के साथ साथ व्यवसायिक शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाना चाहिए। भारतीय धर्म और दर्शन में योग का अत्यधिक महत्व है। अध्यात्मिक उन्नति या शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए योग की आवश्यकता व महत्व को प्रायः सभी दर्शनों एवं भारतीय धार्मिक सम्प्रदायों ने एकमत व मुक्त कंठ से स्वीकार किया है। आज शिक्षण ऑनलाईन वेब टीचिंग एवं ई–लर्निंग तक इसका विस्तार हो चुका है।

Aristotle ने ठीक ही कहा हैं कि– "शिक्षा की जड कडवी है, पर उसके फल मीठे हैं।" अध्यापन की जडता भरी पद्धति के प्रति सजग होना और सही पद्धति को समझना व अपनाना बेहद जरूरी है।

संदर्भ सूचिः–

शिक्षा दर्शन–डॉ. रामशकल पाण्डेय, आगरा।

इतिहास शिक्षण, गुरसरन त्यागी, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

हिन्दी भाषा शिक्षण, भाई योगेन्द्र जीत, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।